सत्यमेव जयते

भुमिज भासा चेदेन पुति
भूमिज भाषा प्रवेशिका
BHUMIJ PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई–पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई–सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य–सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई–पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई–सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई–पाठशाला ePathshala के माध्यम से ई–सामग्री प्राप्त करें।

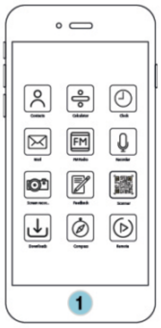
प्ले स्टोर से ई–पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें

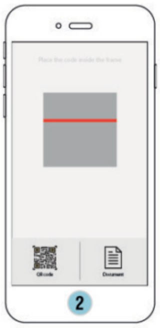
क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें

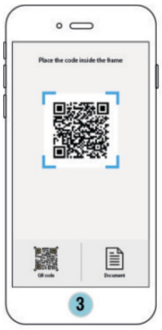
स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें

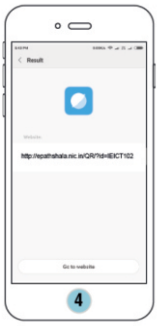
लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें

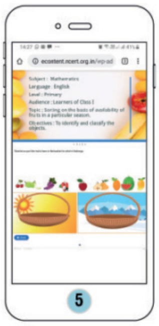
उपलब्ध ई–सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई–पाठशाला द्वारा ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई–सामग्री प्राप्त करें।

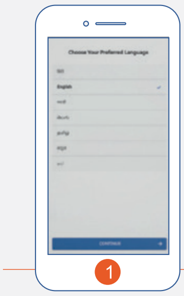
अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें

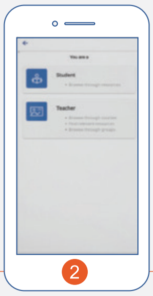
अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी

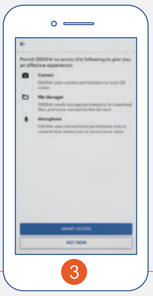
पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें

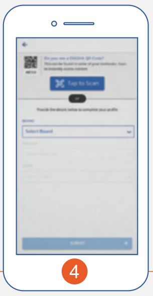
क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें

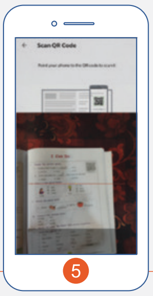
कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें

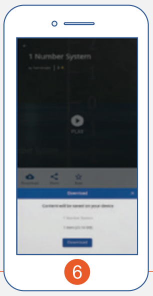
क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

भुमिज भासा चेदेन पुति

भूमिज भाषा प्रवेशिका

BHUMIJ PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education Ministry of Education, GOI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

भुमिज भासा चेदेन पुति

भूमिज भाषा प्रवेशिका

BHUMIJ PRIMER

A basal reader of Bhumij alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Sujoy Sarkar
Anima Baskey

ISBN: 978-81-977442-6-6

First Edition: July, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: G. Yuvaraj
Cover Photo: Jagjiban Sardar, Parmeshwar Sardar

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy

संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चो में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589
E-mail: secy.sel@nic.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित होंगे।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर्स) का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों; जैसे- बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

जुलाई 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका / Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

जुलाई 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Bhumij Primer Development Team

Guidance
Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors
Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Basanta Kumar Panda, Project Director, Centre of Excellence for Studies in Classical Odia, Bhubaneswar
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Binay Pattanayak, Senior Researcher cum Chief Consultant, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru
Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Member Coordinators
Sujoy Sarkar, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru
Sanjaya Kumar Bag, Odia Lecturer, Eastern Regional Language Centre (ERLC), CIIL, Bhubaneswar

Resource Persons

Jagjiban Sardar, Bhumij Language Speaker, Potka, East Singhbhum
Bishajeet Sardar, Bhumij Language Speaker, Kowali, East Singhbhum
Parmeshwar Sardar, Bhumij Language Speaker, Kowali, East Singhbhum
Sri Nath Sardar, Bhumij Language Speaker, Kowali, East Singhbhum
Anima Baskey, Resource Person, ERLC, CIIL , Bhubaneswar
Sudipta Bhattacharjee, Senior Resource Person (SRP), Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Hindi Reviewers

Prem Chandra Jha, Resource Person, ERLC, CIIL, Bhubaneswar
Gungun Jaiswal, Junior Resource Person (JRP), Bharatavani, CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru
Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

कैसे पढ़ानी है भूमिज भाषा प्रवेशिका की किताब

भूमिज का अर्थ है——भूम क्षेत्र में रहने वाले लोग अर्थात सिंहभूम, धालभूम, मानभूम, बड़ाभूम आदि क्षेत्रों में रहने वाले लोग। भूमिज जनजाति भारत के झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओड़िशा, असम आदि राज्यों के अलावा बंग्लादेश में भी मुख्य रूप से निवास करते हैं। भूमिज समुदाय की भाषा भूमिज है जो ऑस्ट्रिक भाषा परिवार की एक शाखा है। इसकी लिपि 'ओल ओनोल' है।

भारत की जनगणना 2011 में भूमिज भाषा बोलने वालों की जनसंख्या 11,17,797 दर्ज की गई है । आंकड़े के अनुसार भूमिज भाषा बोलने वालों की संख्या झारखंड में 2,09,448, पश्चिम बंगाल में 3,76,296, ओड़िशा में 2,83,909 तथा असम में 2,48,144 है।

भूमिज जनजाति की अपनी प्राचीन सांस्कृतिक–परम्परा और रीति–रिवाज है। यह जनजाति माग–बुरु, हादि (सरहुल), काराम (कारमा), बादना (सोहराय) आदि त्योहार मनाती है। फूलों का त्योहार हादि (सरहुल) एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो मार्च–अप्रैल के महीने में मनाया जाता है । इस पर्व में साल के फूल की महत्ता अधिक है । इसके बाद ही यह जनजाति कोई भी नए फूल–पत्ते का प्रयोग तथा धान की बुनाई कर सकते हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूप–रेखा 2022 के अंतर्गत तीन से आठ साल तक के बच्चों को मातृभाषा/घर की भाषा/स्थानीय भाषा/आंचलिक भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है । भारत के ग्रामीण इलाकों में बच्चे कक्षा में शिक्षा प्रदान करने की प्रणाली को ठीक से समझ नहीं पाते हैं । यह बात स्कूल में शिक्षा देने की व्यवस्था को प्रभावित करती है । इसीलिए केंद्र सरकार ने तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को बाल—वाटिका एवं प्रथम तथा द्वितीय कक्षा के बच्चों को आद्य–प्राथमिक स्तर पर मौलिक साक्षरता प्रदान करने की व्यवस्था की है । इसमें स्थानीय गीतों एवं कहानियों के माध्यम से बच्चों की मौखिक भाषा के विकास पर ध्यान दिया गया है । यह कार्य पुस्तक में वर्णित कहानियों, चित्रों एवं वार्तालापों के माध्यम से किया जा रहा है। इसके साथ ही बच्चों के ध्वनि—परिचय, वर्ण—परिचय, पढ़ने एवं लेखन–अभ्यास के लिए भी भाषा—शिक्षण पुस्तकों का प्रयोग किया जा रहा है । बाल–वाटिका स्तर से तृतीय कक्षा तक के बच्चों को मातृभाषा में पढ़ाने से उनके बौद्धिक विकास के साथ–साथ उनकी सृजनशीलता एवं कल्पनाशक्ति का भी विकास हो सकता है । बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ना–लिखना सीखने के साथ–साथ धीरे–धीरे हिन्दी भाषा में कैसे पढ़–लिख सकते हैं, इसकी सार्थक पद्धति बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूप–रेखा 2022 में विस्तृत रूप से लिखी गई है । बच्चे पहले पढ़ना–लिखना सीखते हैं । इसीलिए भूमिज भाषा की वर्णमाला की पुस्तक में बच्चों की मातृभाषा एवं स्कूल की हिन्दी भाषा की समस्त ध्वनियों, वर्णों एवं मात्राओं को स्थान दिया गया है । बच्चों की संस्कृति एवं परिवेश से शब्द संगृहीत किए गए हैं एवं पुस्तक में उन्हें स्थान दिया गया है ।

बहुभाषी शिक्षा का मूल उद्देश्य है बच्चों के घर की भाषा से पढ़ना–लिखना शुरू कर के राज्य की भाषा में पढ़ने—लिखने की उनकी दक्षता को बढ़ाना । भूमिज भाषा में प्रस्तुत यह प्रवेशिका झारखंड के शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं के लिए तैयार की गई है । मौलिक साक्षरता के चार प्रमुख कदम होते हैं । पहले कदम में कहानी, कथा एवं चित्र के माध्यम से बच्चों का बौद्धिक विकास किया जाता है । उसके बाद भाषा–शिक्षण के लिए बच्चों को वस्तु के साथ–साथ शब्दों के संपर्क से परिचित कराया जाता है । शब्दों में व्यवस्थित अक्षरों का परिचय कराया जाता है । इस पर्याय में बच्चे अलग–

अलग अक्षरों को पहचानना सीखते हैं । इसके माध्यम से बच्चे ध्वनि एवं वर्ण के बीच के संपर्क को समझते हैं । इस भाषा प्रवेशिका को कैसे पढ़ना है, इसके मूल बिंदुओं को नीचे लिखा गया है—

ध्वनि–परिचय: बच्चे चित्र देखकर वस्तु का नाम कहेंगे । शिक्षक पूछेंगे कि चित्र का नाम किस ध्वनि से शुरू होता है ? जैसे,'अमरि' का चित्र देख कर बच्चे यह पहचानेंगे कि यह 'अ' ध्वनि से शुरू होता है ।

वर्ण–परिचय: शिक्षक पहले बच्चों को बताएंगे कि 'अ' वर्ण कैसे दिखता है । फिर दिए गए कुछ शब्दों में से 'अ' अक्षर या वर्ण को पहचानने के लिए कहेंगे । तीन चार शब्दों में से बच्चे 'अ' अक्षर की ध्वनि का उच्चारण करेंगे एवं 'अ' अक्षर को लिखने का अभ्यास करेंगे।

पढ़ना: बच्चे चित्र देख कर अपनी भाषा में शब्द बोलेंगे । उस शब्द के ऊपर उंगली चला कर बच्चे 'अमरि' पढ़ेंगे । अन्य शब्दों को पढ़ कर उन शब्दों में बच्चे 'अ' को पहचानेंगे एवं बोलेंगे । शब्द के शुरू में, बीच में एवं अंत में 'अ' कहाँ पर है, शिक्षक यह बच्चों को बताएंगे । श्याम पट पर 'अ' लिखने के समय शिक्षक 'अमरि' शब्द के साथ–साथ अन्य तीन–चार शब्द भी लिखेंगे । बच्चों को एक–एक करके बुलाएंगे एवं उन से शब्द को पढ़ने एवं वर्ण को पहचानने के लिए कहेंगे । चूँकि ये सारे शब्द बच्चों के परिचित परिवेश से लिए जाते हैं इसलिए बच्चे किताब में चित्र देखकर इन शब्दों को आसानी से पहचान पाएंगे और अपनी भाषा में उन्हें बोल पाएंगे । शिक्षक एक शब्द लिखकर उसके प्रत्येक वर्ण को अलग–अलग पढ़ने के लिए बच्चों को कहेंगे तथा वर्णों को जोड़कर शब्द को पढ़ने के लिए कहेंगे । इस से बच्चों का वर्ण–परिचय, शब्द–परिचय एवं ध्वन–परिचय भी हो सकता है । एक बच्चे के द्वारा शब्द को पढ़ते समय अन्य बच्चे उसके साथ मिलकर शब्द को दोहराएंगे । इसको कहा जाता है 'सामूहिक पठन' ।

लेखन: शिक्षक पहले बच्चों को 'अमरि' शब्द का 'अ' लिखना सिखाएंगे । बाएँ से दाहिनी ओर लिखने के लिए कलम को कैसे चलाया जाता है, शिक्षक यह करके दिखाएंगे । इसको कहा जाता है, 'सहायक लेखन' । इसके बाद बच्चे किताब में दिए गए खाली स्थान में देखकर स्वयं 'अ' लिखेंगे । बच्चों के लिखने–पढ़नेके समय शिक्षक इसमें सहयोग करेंगे ।

बच्चों की मौखिक भाषा के विकास के लिए प्रत्येक प्रविष्टि में दो–तीन वाक्य के छोटे–छोटे गीत दिये गए हैं । शिक्षक उस को गाकर एवं पढ़कर बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे तथा विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध बच्चों की कहानी की किताब से कहानियाँ पढ़कर बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे । शिक्षक प्रथम एवं द्वितीय कक्षा के बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानी एवं गीत भी सुनाएंगे । प्रवेशिका में जितने शब्द दिए गए हैं, वे साक्षरता का नमूना मात्र हैं । बच्चे सैकड़ों की संख्या में शब्द जानते हैं । एक वर्ण वाला शब्द पूछने से बच्चे अनेक शब्द सुना सकते हैं । शिक्षक पूछ सकते हैं कि 'अ' से शुरू होने वाले कुछ शब्द सुनाओ ।

बच्चों की सुविधा के लिए पहले भूमिज भाषा में उपलब्ध वर्णमाला से गीत/अक्षर/शब्द दिए गए हैं । इन्हें सीखने के समय बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से हिंदी की ध्वनि एवं लिपि भी सीख सकते हैं।

नोट: भूमिज भाषा में हिंदी भाषा के सारे वर्ण नहीं है । इसीलिए बाद में बाकी वर्णों को हिंदी भाषा से लिया गया है । मातृभाषा में उपलब्ध वर्णों एवं मातृभाषा में नहीं रहने वाले हिंदी वर्णों को मिलाकर यह भूमिज प्रवेशिका तैयार की गई है।

राज्य के विद्यालयों में वितरित 'शिक्षक सहायक पुस्तिका' पढ़कर आप मौलिक साक्षरता के बारे में अधिक जानकारी ले सकते हैं।

नीचे दी गई रेखाओं को देखो और खाली स्थानों में उसी तरह की रेखाएँ बनाओ :

खड़ी रेखा :

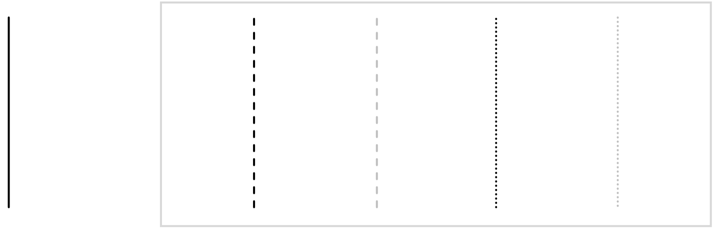

पड़ी रेखा :

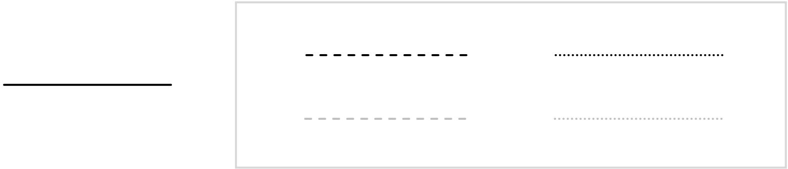

आड़ी रेखा 1 :

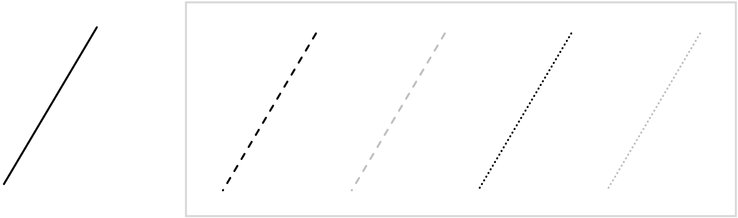

आड़ी रेखा 2 :

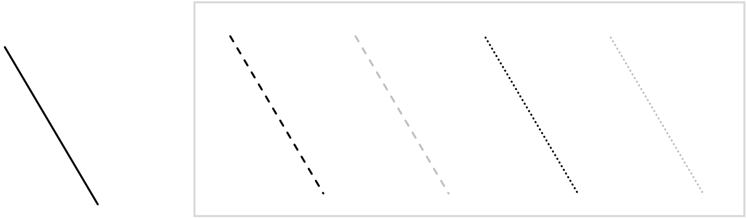

अर्ध वृत्ताकार रेखा 1 :

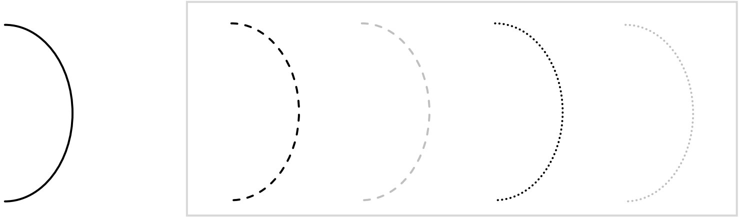

अर्ध वृत्ताकार रेखा 2 :

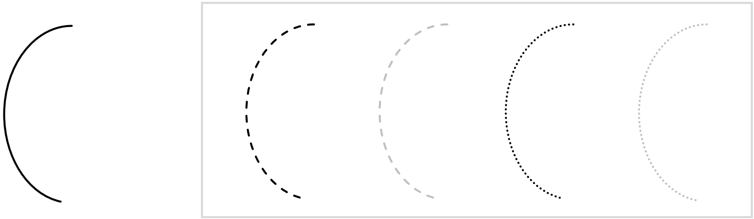

नोट: शिक्षक यह सिखाएँगे कि कलम/पेंसिल को कैसे पकड़ें और दिये गये स्थानों में रेखाएँ कैसे खीचें।

भुमिज बोरोन हिसिर

सुरान बोरोन

अ	आ	इ	उ	ए	ओ	अं

मात्रा →	◌ा	◌ि	◌ु	◌े	◌ो	◌ं

जोम्पे बोरोन

क	ग	ङ	
च	ज	ञ	
ट	ड	ण	
त	द	न	
प	ब	म	
य	र	ल	व
स	ह		

हिंदी वर्णमाला (जो भूमिज मे नहीं हैं)

स्वर वर्ण				
ई	ऊ	ऋ	ऐ	औ

व्यंजन वर्ण				
ख	घ	छ	झ	ठ
ढ	थ	ध	फ	भ
श	ष	क्ष	त्र	ज्ञ
ढ़				

अतिरिक्त वर्ण	
अः	ड़

अ

अमरि

बेहया

अमरि बाहा हेंदे पुंड़ि,
जो ताय लटिम डुंड़ि ।।

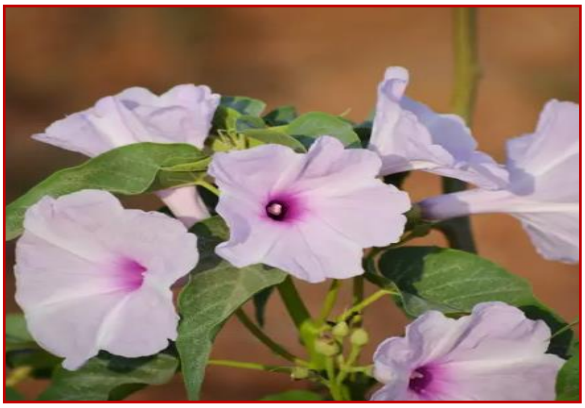

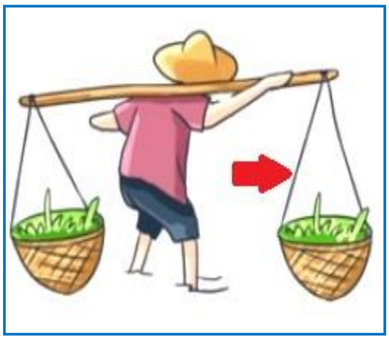

अनल	सिकअर	कुड़िअ
अल्पना	भार ढोने की रस्सी	बाज़

अ अ अ

आ

आरिल

ओला

हेंदें हेंदें रिमिल,

रिमिल आते उड्डुमा आरिल ।।

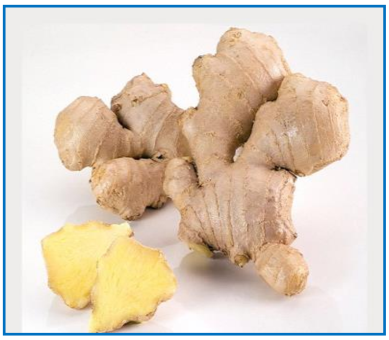

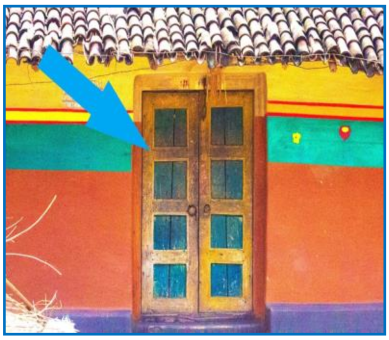

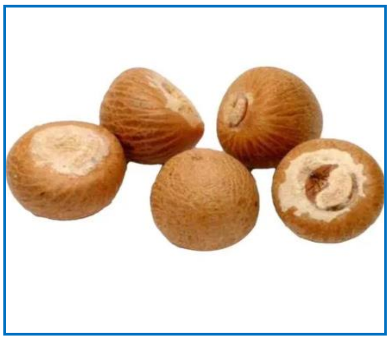

आदा	दुआर	गुआ
अदरक	दरवाज़ा	सुपारी

आ आ आ

इ

इपिल

तारा

इपिल झलकव सिरमा रे,
मन आदा तान रसका रे ।।

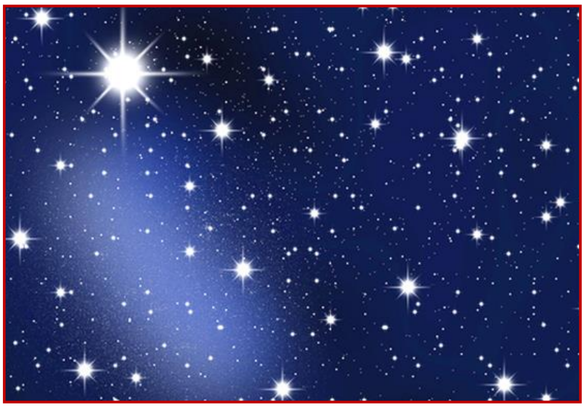

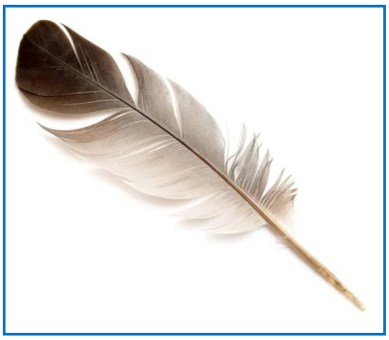

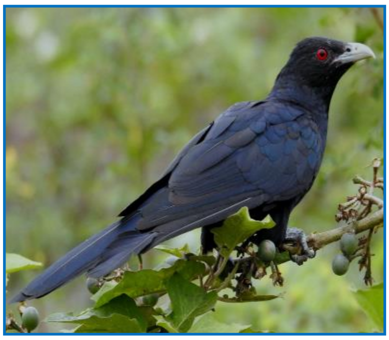

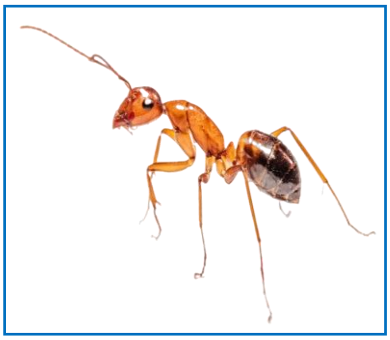

इल	कुइलि	मुइ
पंख	कोयल	चींटी

इ इ इ

उ

उलि

आम

इसिन उलि सासाअं,
जोम गे साना तान ।।

उपल	काउरा	बुसुउ
कमल	गंगुरा	पुआल

उ उ उ

ए

एदेल

सेमल

एदेल बाहा फुलि,
दादा किरिञ आञ मे ।।

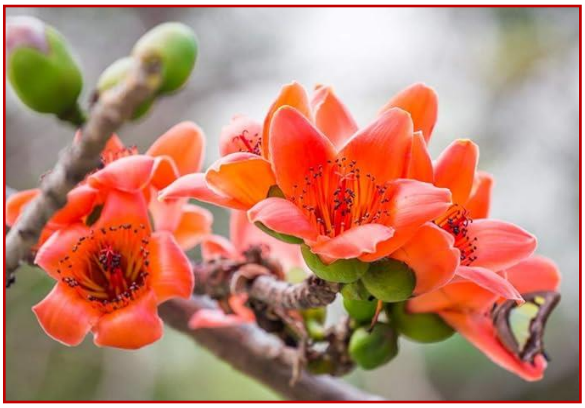

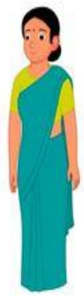

एरा	माएनो	कुलाए
औरत	मैना	खरगोश

ए ए ए

ओ

ओड़ाः

घर

अंचिर पंचिर ओड़ाः ताले,
बुगि ते मेना आले ।।

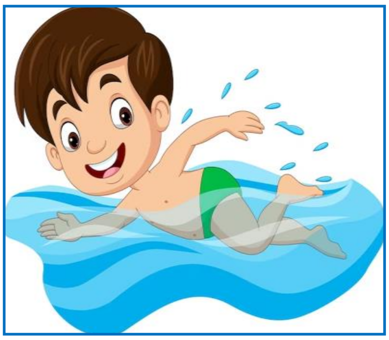

ओयरा	ओड़ासि	जनओ
तैरना	खटमल	झाड़ू

ओ ओ ओ

अं

अंगड़ि

उँगली

अंगड़ि रे ननल हिजुआ,
ति रेन पेड़ेज् बदला ।।

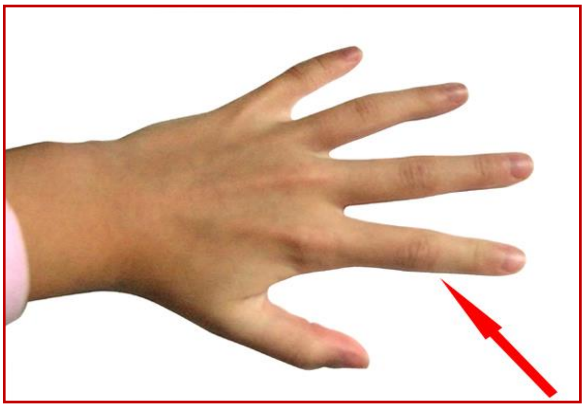

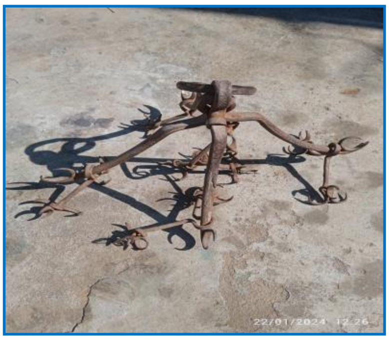
22/01/2024 12:26

अंकड़ि	कअंदरत	सासाअं
अंकुश गुच्छा	कंघी	हल्दी

अं अं अं

क

ककर

उल्लू

लुंडु लुंडु कोयोः ककर,
सिंगि जपिदाय निदय होनर ।।

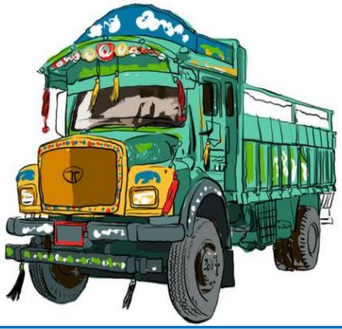

कमला	काटकम	टरक
संतरा	केकड़ा	ट्रक

क क क

ग

गइ

गाय

गुरिज् तोवा ओमे गइ,
आबुवा गइ चेंहरा गइ ।।

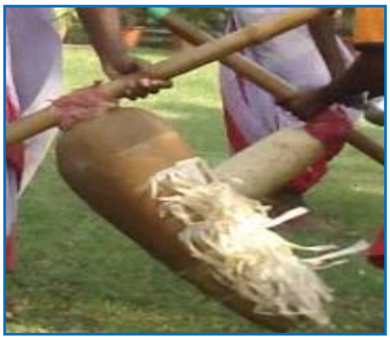

गड़ि	गगरि	भुआंग
बंदर	गगरा	वाद्य यंत्र

ग ग ग

ङ

बुलुङ

नमक

सासाअं सुनुम बुलुङ,
उतु सिबिला बुलुङ ।।

हलङ	मलङ	आताङ
चावल का आटा	कपाल	लेना

ङ ङ ङ

च

चके

मेंढक

चके सेन झबुड़ झबुड़,
चके राः टेरे टेरे ।।

चटइ	बचम	चमच
आसन	सबई घास	चम्मच

च च च

ज

जटि

चटाई

दुब काते जटि रे,
पोड़ाव आबु एला रे ।।

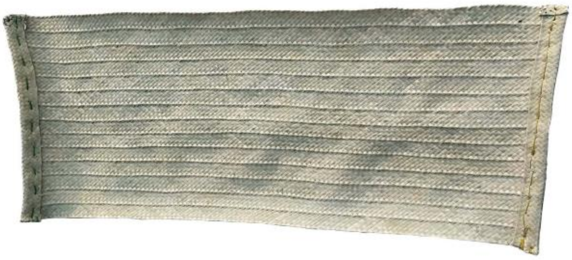

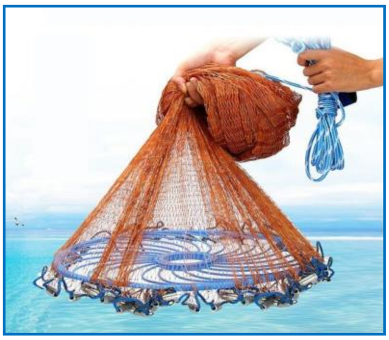

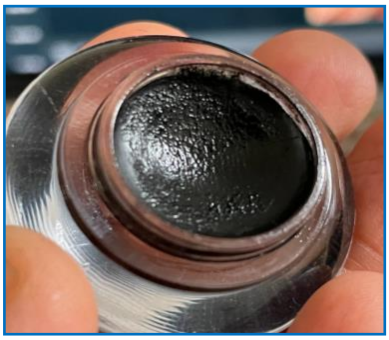

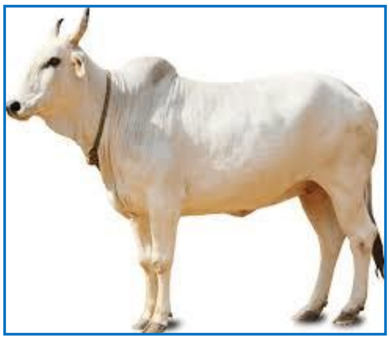

जलिम	कजड़	उरिज
जाल	काजल	बैल

ज ज ज

ञ

माञ

माँ

दुलाड़िञा इञा माञ
तोवा माड़ि ओमाञ माञ ।।

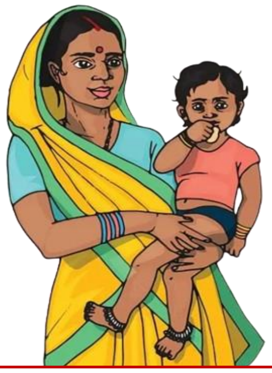

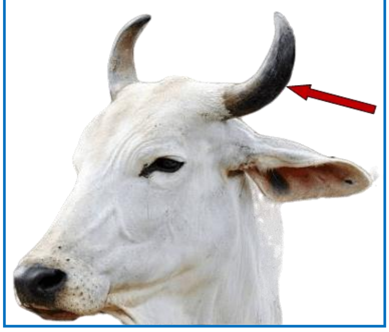

फिड़िञ	दिरिञ	किदिञ
टिड्डा	सींग	कानखजूरा

ञ ञ ञ

ट

टला

महुआ फल

बाहा रेदो मादकम,
जो रेदो टला ।।

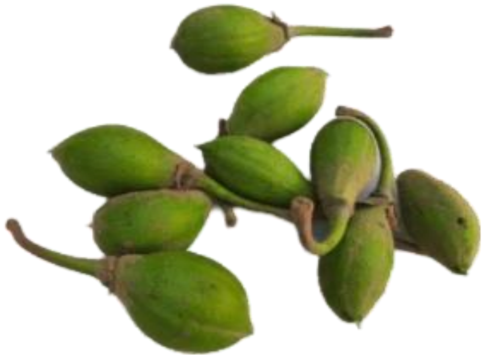

टटका	रुटका	करयट
कढ़ाई	रुगड़ा	तोता

ट ट ट

ड

डलिम

अनार

रांगा रांगा इसिन डलिम
केचा लेरे रांगा डलिम ।।

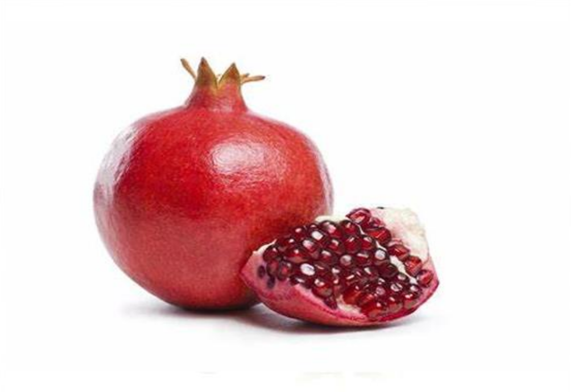

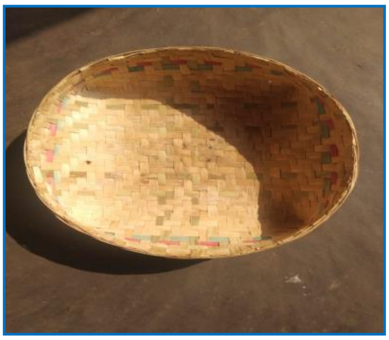

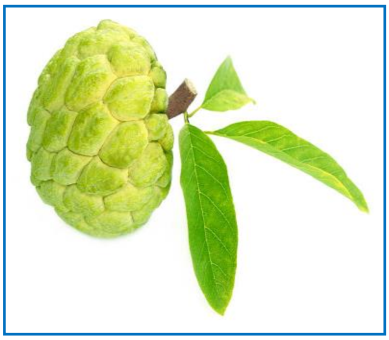

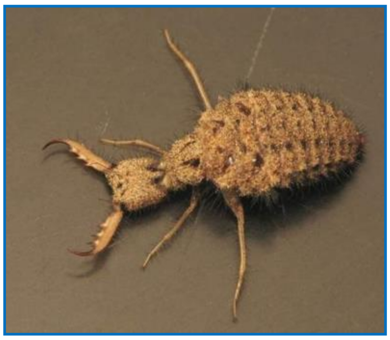

डला	बडना	पुगिंड
डलिया	शरीफा	चिट्टियों का राजा

ड ड ड

ण

अराण

जुआ

बुरु रेया सान,
बाइआबु अराण ।।

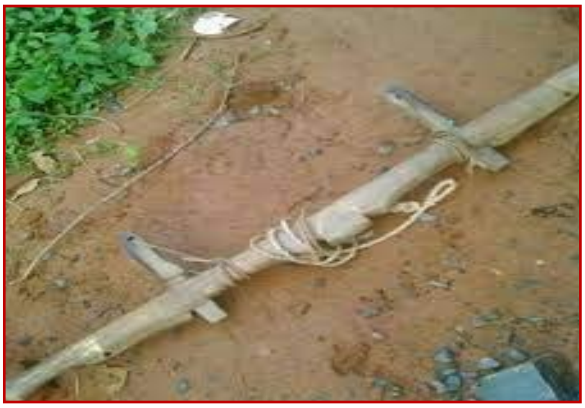

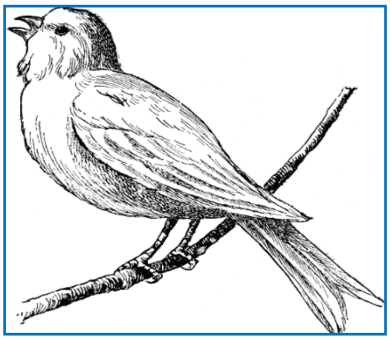

टेणा	धुणा	चेणे
सीढ़ी	धूमन	चिड़िया

ण ण ण

त

तसाद

घास

जरगि गामा जर जर,
तसाद हारा हर हर ।।

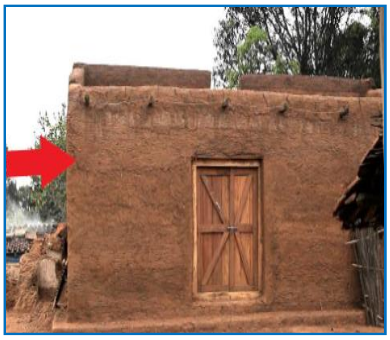

तड़	पुतम	कंत
ताल	जंगली कबूतर	दीवार

त	त	त	

द

दलइ

झूला

आमेम दलइ इञेञ दलइ,
दारु रेगे दलइ दलइ ।।

दलन	मदकम	माद
पक्का घर	महुआ	बाँस

द द द

न

नगरा

नगाड़ा

दुल दुल सड़िया नगरा,
रु गे सानाञा नगरा ।।

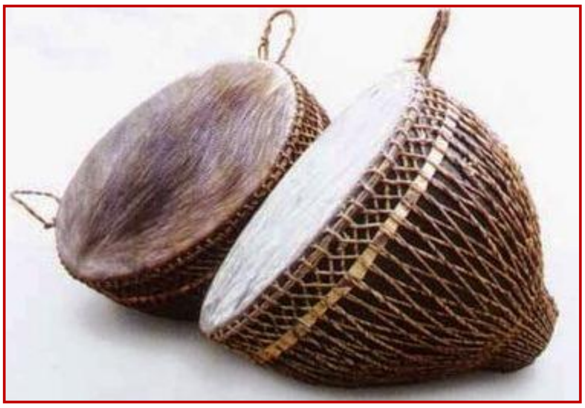

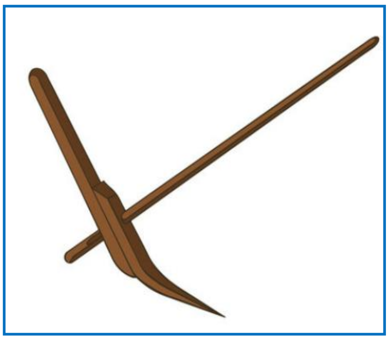

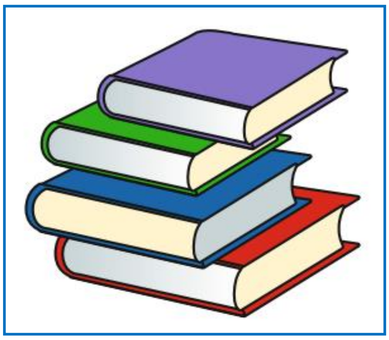

नल	तनल	ताबेन
हल	किताब	चिवड़ा

न	न	न	

प

पटल

परवल

पटल लोब गे नेलोअ तान,
दानांग आते मेरोम
लोड़ो तान ।।

परकम	खपरा	चंडुप
खटिया	खपरा	चांद

प प प

ब

बटम

बरगद

बटम दारु उमुल रे,
उनुअ सनाञ दलइ रे ।।

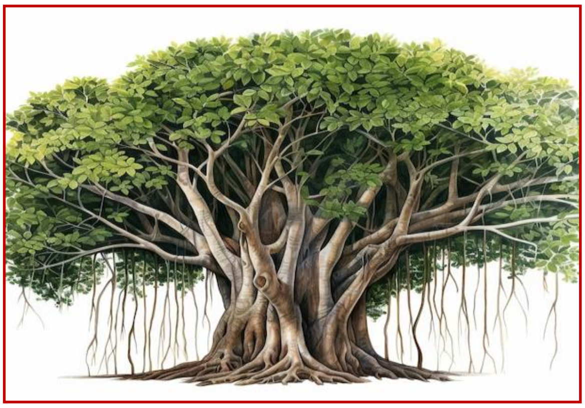

बगला	बबला	तारब
बगुला	बबूल	चार फल

ब ब ब

म

मसरि

मसूर दाल

हेड़ेम मसरि जुड़ि इञा,
आजार हारते ओमे देंगा ।।

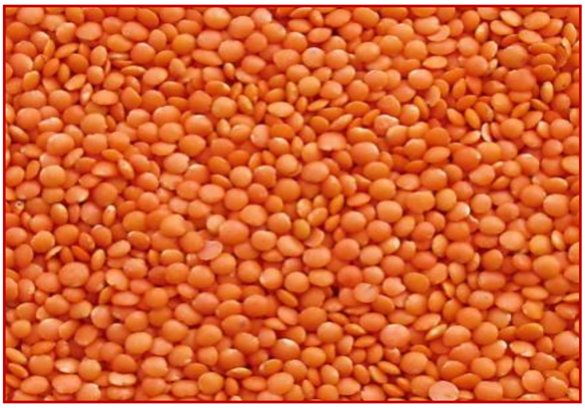

मजा	गमचा	सादम
मोजा	गमछा	घोड़ा

म म म

य

तायन

मगरमच्छ

होरोज सेना हिटो होटो,
तायन सेना किचो कोचो ।।

पायरा	पयला	बिलय
कबूतर	पइला	बिल्ली

य य य

र

रला

हरड़

हाड़ाद रला नेलोअ चेंहरा,
होड़मो रे ओमे पेड़ेज् चेंहरा ।।

रमड़ा	अरसि	किकिर
बरबट्टी	आईना	नीलकंठ

र र र

ल

लवा

गूलर

लवा साब लेरे लेटेम लेटेम,
जोम लेरे हेड़ेम हेड़ेम ।।

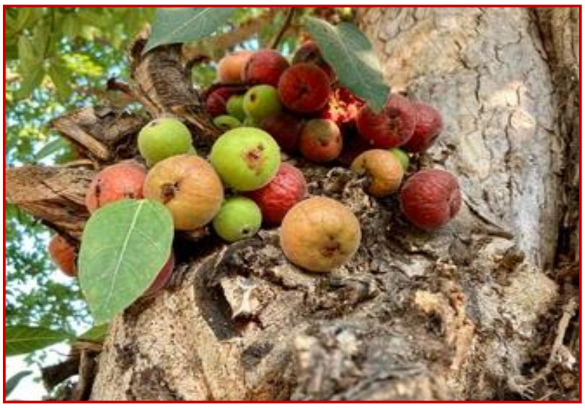

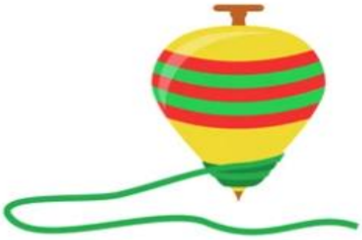

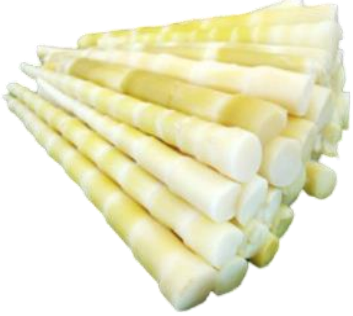

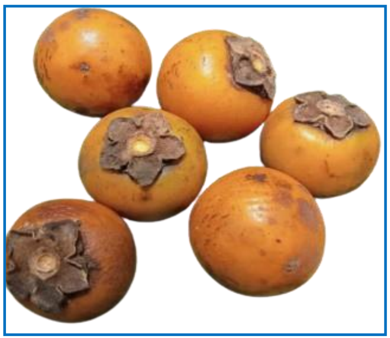

लटिम	हेलता	तिरिल
लट्टू	करील	केंदू

ल ल ल

व

हव

कुरकुट

हव चाटनी जोम मोजा आदाआ,
कोटा एम सेने रे हव को
हुहुआ ।।

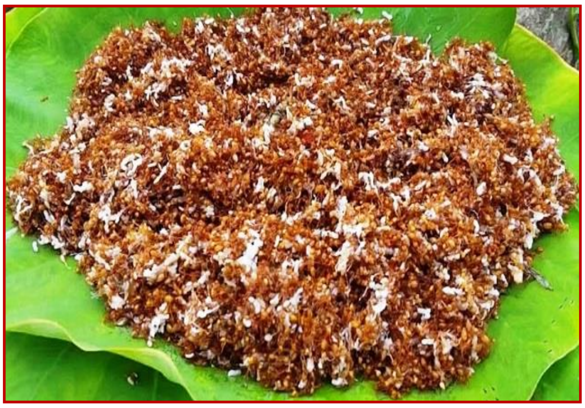

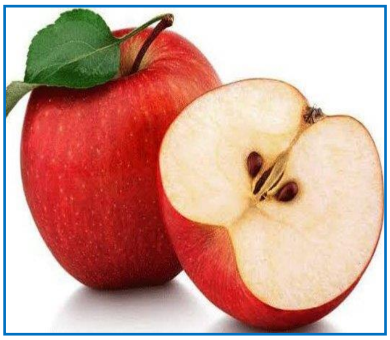

कोवड़ि	चावलि	सेव
कौड़ी	चावल	सेब

व	व	व	

स

सन

लकड़ी

सन ते बुन इसिनेया,
राबांग रेबु जुरुप एना ।।

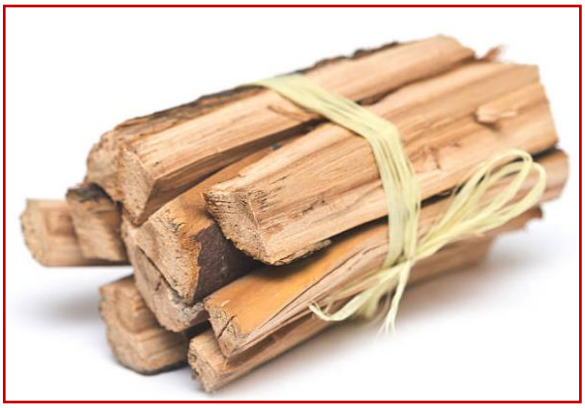

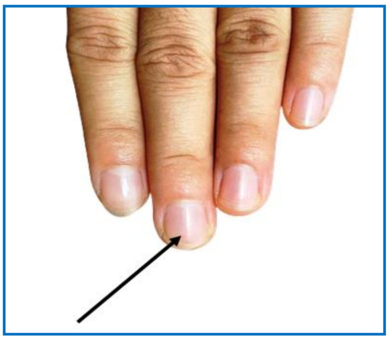	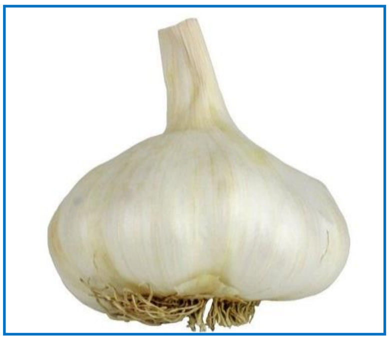	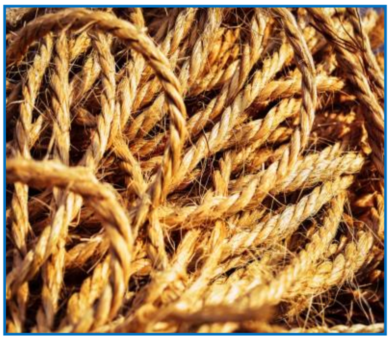
सरसार	रासणि	आड़ास
नाखून	लहसुन	पुआल की रस्सी

स स स

ह

हइ

मछली

गाड़ा रेन हइ निरेयाको साइ साइ,
साबेम सेनोअ ओयरानाको
फाइ फाइ ।।

हरेन	गहम	मुह
रास्ता	गेहूँ	नाक

ह ह ह

स्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
अ	उदासीन स्वर	कदम 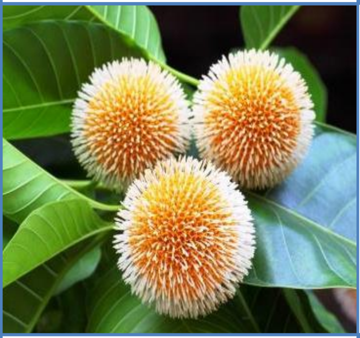	सरम 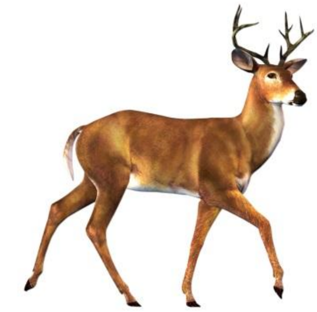
आ	◌ा	तावा 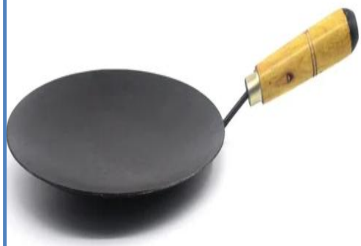	बाबा 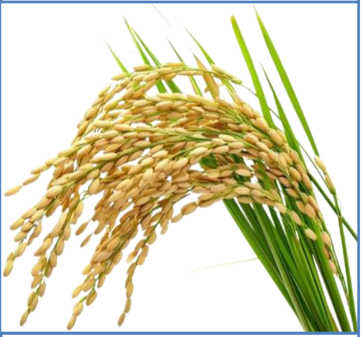
इ	◌ि	हिसिर 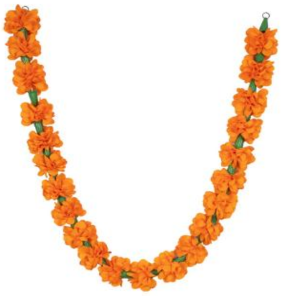	लिलि 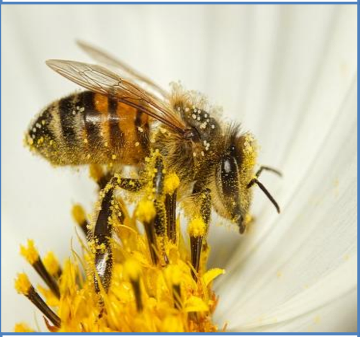
उ	◌ु	मुला 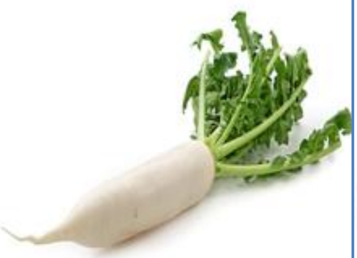	कुदा 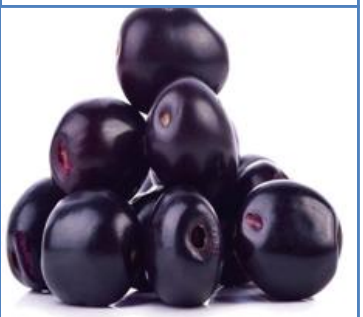

स्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
ए	◌े	केड़ा	डेडेम
		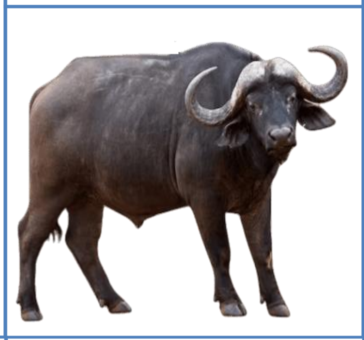	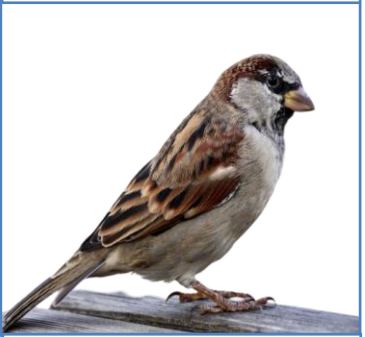
ओ	◌ो	जोनार	जोजो
		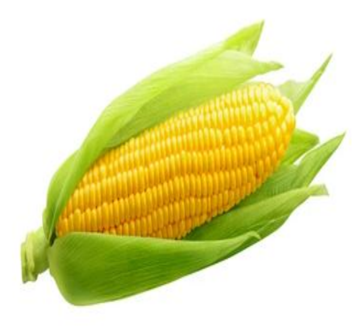	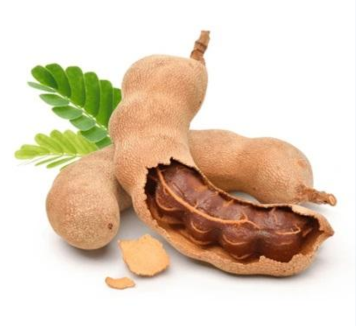
अं	◌ं	अंकोल	गंगइ
		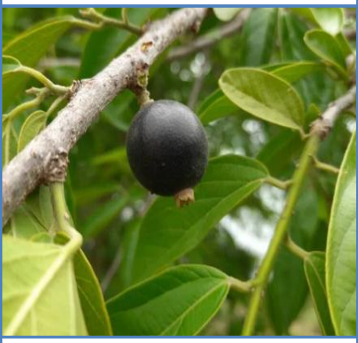	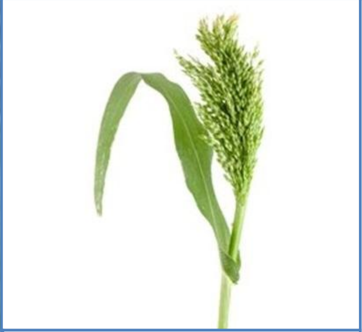
अः	◌ः	दाः	टुपअः
		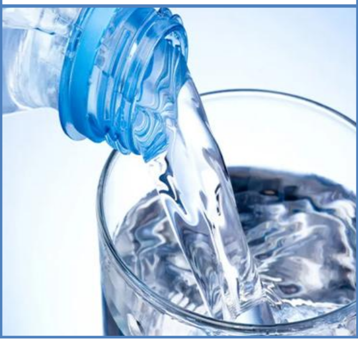	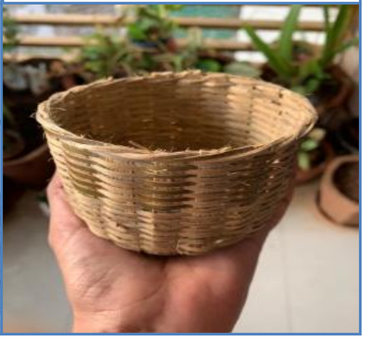

स्वर	मात्रा चिन्ह	उदाहरण	उदाहरण
	◌्	मेद्	उद्

लेका			
1	मज्	एक	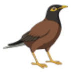
2	बार	दो	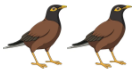
3	आपेज्	तीन	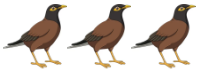
4	उपुन	चार	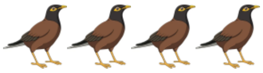
5	मणे	पाँच	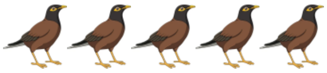
6	तुरे	छह	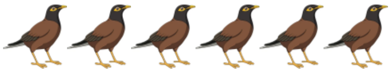
7	एयालि	सात	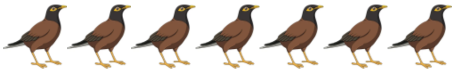
8	इरालि	आठ	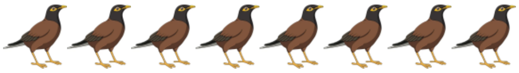
9	आरेलि	नौ	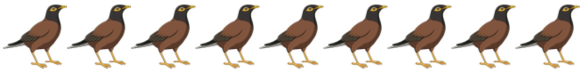
10	गेले	दस	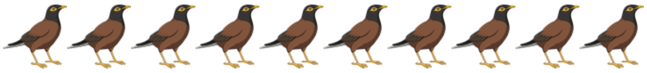
11	गेलेमज्	ग्यारह	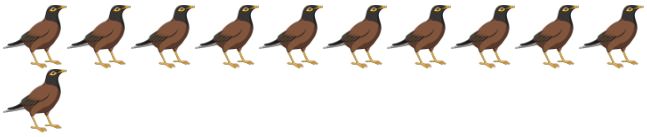
12	गेबार	बारह	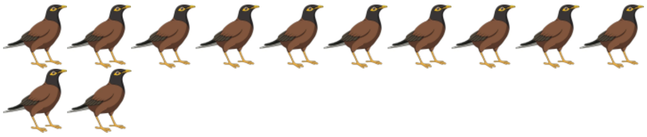
13	गेआपेज्	तेरह	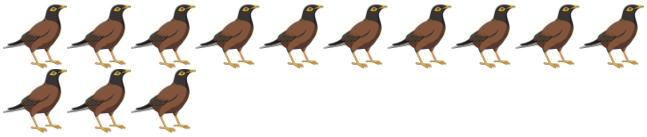
14	गेउपुन	चौदह	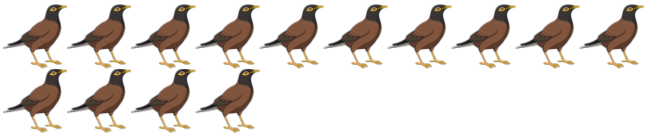

15	गेमणे	पंद्रह	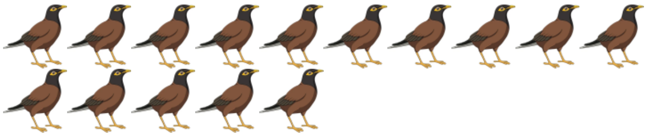
16	गेतुरे	सोलह	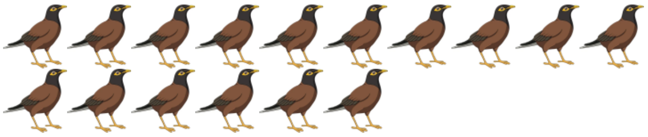
17	गेयालि	सत्रह	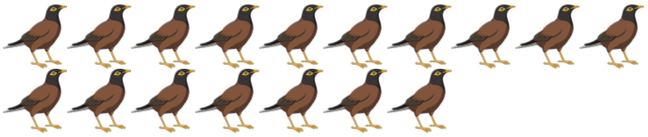
18	गेइरालि	अठारह	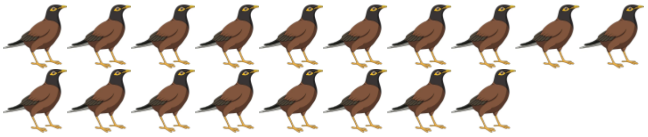
19	गेआरेलि	उन्नीस	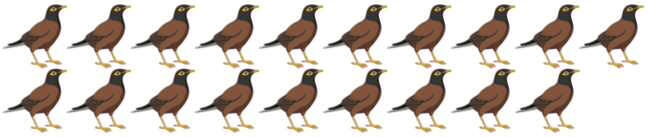
20	बारगेल	बीस	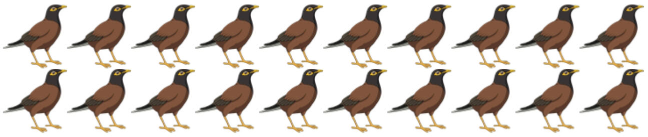

1	1	1	1	
2	2	2	2	
3	3	3	3	
4	4	4	4	
5	5	5	5	
6	6	6	6	
7	7	7	7	
8	8	8	8	
9	9	9	9	
10	10	10	10	

11	11	11	11	
12	12	12	12	
13	13	13	13	
14	14	14	14	
15	15	15	15	
16	16	16	16	
17	17	17	17	
18	18	18	18	
19	19	19	19	
20	20	20	20	

हिंदी वर्णमाला

स्वर						
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन					
क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व	श	
ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

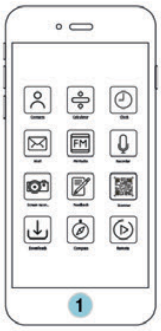

Install ePathshala Scanner app from Play Store and open

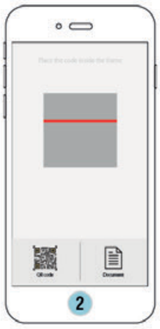

Get ready with QR code scanning window

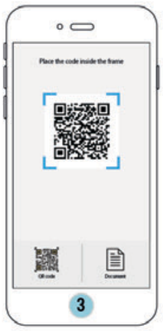

Place scanner above the QR code

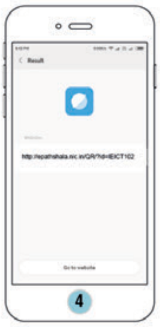

Select and click on the link

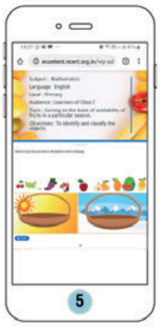

Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

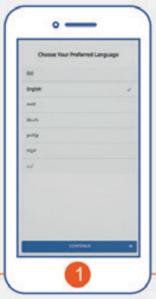

Select preferred language

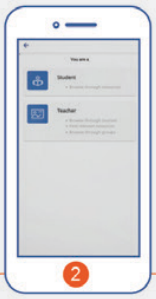

Choose your role: Student or Teacher

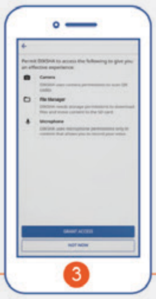

Grant access and allow app permissions

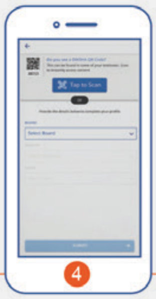

Tap to scan the QR code

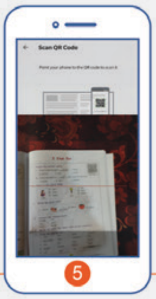

Focus camera on the QR code in textbook

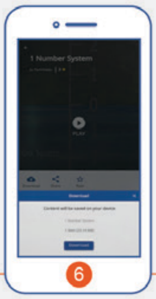

Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language
1	ANAL
2	ANGAMI
3	AO
4	ASSAMESE
5	BHUTIA
6	BODO
7	DEORI
8	DESIA
9	DIMASA
10	GADABA (GUTOB)
11	GARO

SN	Language
12	HALABI (HALBI)
13	HMAR
14	JATAPU (KUVI)
15	JUANG
16	KABUI (RONGMEI)
17	KARBI
18	KHANDESHI
19	KHARIA
20	KINNAURI
21	KISAN (KUNHU)
22	KODAVA (COORGI/KODAGU)

SN	Language
23	KONDA
24	KORKU
25	KOYA
26	KUI
27	KUKI
28	KURUKH/ORAON
29	KUWI
30	KUZHALE (KHEZHA)
31	LIANGMAI
32	LIMBU
33	LOTHA

SN	Language
34	MANIPURI
35	MAO
36	MISHMI
37	MISING
38	MIZO
39	MOGH
40	MUNDARI
41	NEPALI
42	NYISHI (NISSI)
43	RAI
44	SANTALI (ODISHA)

SN	Language
45	SANTALI (WEST BENGAL)
46	SAVARA (SORA)
47	SHERPA
48	SÜMI (SEMA)
49	TAMANG
50	TANGKHUL
51	TANGSA
52	TIWA (LALUNG)
53	TULU
54	WANCHO

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language
55	ADI
56	BHUMIJ
57	CHANG
58	GONDI
59	HALAM

SN	Language
60	HO
61	KHIAMNIUNGAN
62	KOCH
63	KODA (KORA)
64	KOLAMI

SN	Language
65	KOM
66	KONYAK
67	LADAKHI
68	LEPCHA
69	MARA (LAKHER)

SN	Language
70	MARAM
71	NOCTE
72	PASHTO
73	POCHURY
74	RABHA

SN	Language
75	RENGMA
76	SHINA
77	TAMIL
78	TIBETAN
79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (45)

SN	Language
80	ARABIC/ARBI
81	BALTI
82	BENGALI
83	BHILI/BHILODI
84	BISHNUPURIYA (BISHNUPRIYA MANIPURI)
85	CHAKHESANG
86	CHOKRI
87	DOGRI
88	GANGTE

SN	Language
89	GUJARATI
90	HINDI
91	KANNADA
92	KASHMIRI
93	KHASI
94	KHOND/KONDH
95	KOKBOROK (TRIPURI)
96	KONKANI
97	KORWA

SN	Language
98	LAHAULI
99	LAHNDA
100	LAI (PAWI)
101	MAITHILI
102	MALAYALAM
103	MALTO
104	MARATHI
105	MARING
106	MONPA

SN	Language
107	MUNDA
108	NICOBARESE
109	ODIA
110	PAITE
111	PARJI
112	PHOM
113	PUNJABI
114	SANGTAM
115	SANSKRIT

SN	Language
116	SANTALI (JHARKHAND)
117	SINDHI
118	TELUGU
119	THADOU
120	URDU
121	VAIPHEI
122	ZELIANG
123	ZEME (ZEMI)
124	ZOU

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
✆ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
✆ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in